# कुआं करता एक वृद्ध का उद्धार

बिहार के सुपौल जिला अर्न्तगत सुपौल प्रखंड में एक पिपराखुर्द पंचायत है। जिस पंचायत के अन्तर्गत चार राजस्व गांव हैं, जिसमें एक राजस्व गांव परसा है, जिसका एक टोला अमठो नरहा है। इस टोले में दो कुआं है एक मृत एवं दूसरा जीवित। जीवित कुआं 70 वर्षीय किसान श्री रामकिषुन साह के दरवाजे पर अवस्थित है। यह कुआं वर्षों से मृतप्राय था। रामकिषुन साह कई वार कुएं का मरम्मत करवाना चाहा लेकिन परिवार और आस–पड़ोस के लोग को यह प्रसंग नहीं भाया। वे कुआं को देखकर वर्षों से निराष थे।

मेघ पाईन अभियान के दूसरे चरण में जब अभियान कार्यकर्ता रामकिषुन बाबा से मिले तो बाबा को एक नया बल मिला। बाबा वर्षा जल पीने वाले प्रथम जलदूत बने। इसके उपरान्त टोला में कुआं की बातें उठी। इसके लिये ग्रामीणों के साथ बैठक हुई। बैठक को सम्पन बनाने में बाबा ने सारी व्यवस्था की। बैठक में उन्होंने अपने मन की बातें विस्तार से रखा। चापाकल सभी बीमारी का जड़ है। यदि लोग कुआं का पानी पीते तो इतनी बीमारी नहीं होती। चापाकल से लोगों का धर्म भी जाता क्योंकि इसमें चमड़ा का उपयोग होता। बाबा ने चापाकल को राक्षस तक कह डाला। इतनी सारी बात कहने के पीछे अभियान कार्यकर्ता का बाबा के साथ होना और लोगों द्वारा शांतिपूर्वक बातें सुनना लोक जागरुकता का प्रतीक था। अंत में बाबा ने भाबुक होते हुए कहा कि श्अब वे सारे विरोध के बावजूद अपने कुआं का जिर्णोद्धार करेंगे ही।श उन्होंने लोगों से कहा कि श्बाबू हमर धर्म बचावह। चमड़ाबाला पानि पीबैत–पीबैत हमरा सँ कईक साल सँ पाप भऽ रहल अछि। आई बूढ़क बात के सुनैत छैक।श

बैठक में सबकुछ समझते हुए कि उनके परिवार के लोग कुआं जिर्णोद्धार का समर्थन नहीं करेंगे इसके बाबजूद उन्होंने कुआं जिर्णोद्धार का व्रत लिया। किसी तरह आर्थिक व्यवस्था कर कुआं का लघु मरम्मत कर कुआं का उड़ाही करवाया। कुआं से ही अपना सारा कार्य बाबा ने करना शुरु कर दिया। पिछले वर्ष बाबा ने तीन वार कुआं का उड़ाही स्वयं के साधनों से करवाया। देखते–देखते आस–पड़ोस के लोग भी कुआं का उपयोग शुरु कर दिया है।

बाबा कुआं का पानी पीकर मस्त और प्रसन्न दीखते हैं। उनके पेट की बीमारी कम होती जा रही है। वे खाना भी अधिक मात्रा में खाने लगे हैं। कुआं के पानी में खाना जल्दी पचने की वे वकालत करते

हैं। कुआं के आलावा बाबा वर्षाजल व मटका फिल्टर के भी प्रचारक हैं। बाबा के मुँह से यह सुना जाता है कि श्कुआं के जिर्णोद्धार से उनका भी उद्धार हो गया।